Impact Factor 2.147

ISSN 2349-638x

Refereed And Indexed Journal

AAYUSHI INTERNATIONAL INTERDISCIPLINARY RESEARCH JOURNAL (AIIRJ)

Monthly Publish Journal

VOL-III ISSUE-IX Sept. 2016

Address
•Vikram Nagar, Boudhi Chouk, Latur.
•Tq. Latur, Dis. Latur 413512
•(+91) 9922455749, (+91) 9158387437

Email
•aiirjpramod@gmail.com

Website
•www.aiirjournal.com

CHIEF EDITOR – PRAMOD PRAKASHRAO TANDALE

महादेवी का वेदना भाव

डा गीता हनुमंतप्पा तलवार
सहायक प्रध्यापिका,
हिंदी विभाग ,
श्रिमति अल्लम सुमंग्लम्मा स्मारक महिला महाविध्यालय ,बल्लारी

आधुनिक हिन्दी साहित्य में 'जयशंकर प्रसाद' सुमित्रानंदन पंत और महादेवी वर्मा और निराला यह चारों छायावद के चार स्तम्भ हैं। जिनके आलोक से आधुनिक हिन्दी साहित्य जगमगा रहा है। इन चारों का हिन्दी साहित्य में अपना अलग पहचान अलग व्यक्तिव हम देख सकते है। जयशंकर प्रसाद में 'मस्ती' सूर्यकांत त्रिपाटि निराला में विद्रोह सुमित्रानंदन पंत में कोमलता और महादेवी वर्मा में पीड़ा देख सकते है। आधुनिक युगीन कवयित्री महादेवी के काव्य में वेदना की ऐसी धारा सर्वत्र प्रवाहमान है जो कि पाठकों और आलोचकों के लिए एक अस्पष्ट जटिल एवं दुर्बोध विषय बना हुआ है।

- वेदना के स्वरूप की मीमांसा – महादेवी अपना काव्य काव्य में वेदना–भाव का वेदना पीडा आदि शब्दों में उल्लेख किया है।

जैसेः

- मेरी मधुमय पीड़ा को कोई पर ढूँढ न पाये।
- पा लिया मैंने किसे इस वेदना के मधुर क्रय में

- गई वह अधरों की मुस्कान मुझे मधुमय पीड़ा मेंबोर

उपर्युक्त पंक्तियों में जहाँ भी वेदना या पीड़ा का उल्लेख हुआ है वहाँ उसके साथ मधुर विश्लेषण का प्रयोग भी सर्वत्र हुआ है।
जैसें – ''मधुमय पीड़ा, वेदना के मधुर क्रम आदि।

सामान्यतया, वेदना या पीड़ा न कहकर सुख और प्रसन्नता का नाम देना अधिक उचित है। किन्तु एक अनुभूति ऐसी भी होती है जिसमें एक और सुख हृदय में अमित अल्हाद होता है तो दूसरी ओर अत्याधिक पीड़ा भी। उस मीठी और तीखी अनुभूति को 'प्रेम' या 'प्रणय' की संज्ञा दी जाती है। प्रणयानुभूति में मधुरता और वेदना दोनों का अनुभव एक साथ होता है। इसका प्रमाण अनेक प्रेमी–कवियों की वाणी में मिलता है। आधुनिक कवि प्रसाद ने प्रेम को 'हलाहल' और 'सुधा' दोनों एक साथ बताया है–

''तेरा प्रेम हलाहल प्यारे जब जो सुख से पीते है।
विरह सुधा से बचे हुए है मरने को हम जीते है।''

कहने का तात्पर्य यह है कि कवियों की दुनियाँ में प्रेम को हर्ष और वेदना–मिश्रित बताने का प्रचलन बराबर रहा है, अतः महादेवी की यह मधुर पीड़ा' भी प्रेम की ही प्रर्यायवाची कही जा सकती है।

महादेवी के इस वेदना – भाव की अन्य विशेषताऐं भी प्रणय–भाव के ही अनुकूल है। उस वेदना का उद्भव किसी के 'अधरों की मुस्कान या किसी भी चितवन से बताया गया है। यह हम निम्नाकित पंकितयों में देख सकते है।

''पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा।
तुमको पीड़ा में ढूँढा तुम में ढूढूगी पीड़ा।।

अनेक आलोचक जिन्होंने यहाँ पीड़ा शब्द को प्रचलित अर्थ में ग्रहण किया है इस अंश का अर्थ स्पष्ट करने में असफल रहे है। महादेवी वर्मा के प्रसिद्ध व्याख्याता श्री विश्वम्भर 'मानव' लिखते है कि अंतिम पीड़ा शब्द का अर्थ है पीडामय हृदय। जिसके लिए इतनी पीड़ा सही है उस निष्ठुर के हृदय में भी कभी दर्द उठता है या नहीं यह जानने की कामना भी अत्यंत स्वाभाविक है जिस पीड़ा ने महादेवी जी को उस निष्ठुर से मिलाया है, उसकी प्राप्ति पर वे अपने साथ उपकार करनेवाले को भूल जाऐं, इतनी अकृतज्ञ महादेवी जी नहीं। पर लक्ष्य 'तुम' ही है पीड़ा नहीं।

मानव जी की यह व्याख्या अनेक असंगतियों के कारण अस्पष्ट है। एक तो यह समझ में नहीं आता कि कोई भी प्रेमिका अपने प्रिय के हृदय में दर्द क्यों देखना चाहेगी। फिर महादेवी जी स्थायी पीड़ा को

ढूँढने की बात कहती है। जबकि मानव जी कभी दर्द उठता है या नहीं यह जानने की कामना कहकर कवयित्री के मूल भाव को ही बदल देते है।

महादेवी जी स्पष्ट रूप से कहती है कि 'तुम में ढूँढूगी पीड़ा'' अर्थात उनके लिए ''तुम गौण है! पीड़ा' प्रधान' किन्तु इसके विपरीत 'मानव' जी लिखते है, लक्ष्य तुम ही पीड़ा नहीं! व्याख्या में मूल भाव को भी उलट दिया है। वस्तुतः उपर्युक्त अंश में 'पीड़ा का अर्थ प्रेम या प्रणय है। प्रेम से ही कवयित्री को प्रियतम की प्राप्ति हुई और प्रियतम में भी वह पीड़ा अर्थात प्रेम ढूँढना चाहती है। प्रेमसहित यह प्रणयविमुख प्रियतम से किसी भी प्रेमिका को आनंद कैसे प्राप्त हो सकता है अतः महादेवी का यह कहना है कि '' तुम में ढूँढूगी पीड़ा'' ठीक ही है।

कई बार महादेवी अपनी पीड़ा को सुरक्षित रखने के लिए प्रियतम के मिलन तक को ठुकरा देती है, कवयित्री को मिलन अभीष्टा नहीं क्योंकि उसमें जड़ता है और क्रियाशीलता का अभाव है। एक जगह पर वे कहती है मिलन एकाकी होती है। और विरह में दकेलें की स्थिति रहती है कवयित्री अद्वैतवाद में विश्वास रखती हुई भी द्वैतवाद की स्थिति यह द्वैत के मिथ्था आभास को ही अधिक पसंद करती है आत्मा से परमात्मा का अर्थ है– दोनों का एकाकर हो जाना या आत्मका का निर्वाण या मोझ हो जाना। इस अद्वैतावसी में न कोई प्रेमी रहता है और प्रेयसी। प्रेम का यह समस्त व्यापार तभी तक चल सकता है जब तक कि कवयित्री अपनी प्रयुक्त सत्ता भले ही वह मिथ्था अभास ही क्यों न हो, बनाए रखे। अतः शान्तिपूण्र निर्वाण या मोक्ष की अपेक्षा वह प्रणययुक्त द्वैत के अनुभव को अधिक पसन्द करती है। यही कारण है कि वह अपने असी शरीर जीवन में प्रियतम के दर्शन चाहती है जिससे कि वह अपनी द्वैत स्थिति के साथ साथ प्रेम रस का भी आस्वादन करती रहे–

जैसे

''तुम बॉध पाती सपने में
वो चिर जीवन व्यास बुझा लेती उस छोटे क्षण अपने में।

उपुर्यक्त विवेचन से स्पष्ट है कि महादेवी ने वेदना या पीड़ा शब्द का प्रयोग प्रणय के अर्थ में ही किया है उनके प्रणय में विरह का अधिक्य है, अतः उसे इस संज्ञा से अभिहित करना उचित ही है।

महादेवी के साहित्य में पीड़ा आँसू, माधुर्य, आनन्द तथा उल्लास सभी कुछ है। इनकी कविताओं में पीड़ा के तत्व की प्रधानता को देखकर कुछ आलोचकों ने इन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा है। महादेवी के अपने ही शब्दों में दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की

क्षमता रखता है। हमारे असंख्या, सुख, हमें चाहे मनुष्यता की पहली सीढ़ी तक भी न पहुँचा सके किन्तु हमारा एक बूँद भी जीवन को अधिक उर्वर बनाये बिना नहीं गिर सकता है जिस प्रकार एक एक जल बिन्दु समुद्र में मिल जाता है, कवि का मोक्ष है'' इसी प्रसंग में वे आगे चलकर कहतीहै ''मुझेदुःख के दोनों ही रूप प्रिय है, एक वह जो मनुष्य के संवेदनशील हृदय को सारे संसार से एक विछिन्न बन्धन में बाँध देता है और दूसरा वह जो काल और सीमा के बन्धन में पडे असीम चेतना का क्रन्दन है।'' वे पीड़ा में पियतम और प्रियतम मे पीड़ा को खोजनी है। वे सदा मिटने के अधिकार को अपने पास संभालकर रखने के पक्ष में है। उनका कहना है ''पीड़ा मेरे मानस से भीगे पट–सी लगती है। '' महादवी जी की यह पीड़ा वैयक्तिक न होकर सामन्ती पाशों से बद्ध एवं सामाजिक रूढियों से

ग्रस्त भारतीय नारी जीवन की उन्मुक्त पीड़ा है। छायावादी काव्य में भारतीय नारी जीवन की सिसकती पीड़ा को जोड़ देना महादेवी के काव्य का भौतिक योगदान है। महादेवी जी की विशेषता है यह है कि छायावाद ने व्यक्ति और समाज की किस व्यापक असन्तोंष भावना को अभिव्यक्ति दी, उसमें उन्होंने भारतीय नारी के असंतोष, निराशा और आकांक्षा का स्वर भी जोड़ दिया।

साधारणीकरण एवं रस निष्पत्ति :

यद्यपि महादेवी के काव्य में रस के सभी प्रमुख अवयव विद्यमान है, किन्तु फिर भी उनके वेदना भाव के साथ पाठक का पूर्णतः साधरणीकरण नहीं हो पाता। इसका एक कारण तो यह है कि उन्होंने अपने अधिकाश गीत कल्पना और विचार के आधार पर लिखे है। दूसरे उनका आलम्बन अलौकिक है जिसका प्रत्यक्ष रूप में साक्षात्कार पाठक नहीं कर पाता कभी कभी उनकी मुस्कुराहट की बात अवश्य महादेवी के मुँह से सुनने को मिलती है। इसके अतिरिक्ति महादेवी की शैली में संकेतात्मकता, व्यंग्यात्मकता एवं अस्पष्टता भी आवश्यकता से भी अधिक है, जिससे रसानुभूति में बाधा उपस्थित होती है महादेवी के गीत हमारे हृदय को रस से अणलावित नहीं कर पाते लेकिन मस्तिष्क के व्यायाम के लिए वे आधुनिक

ढुंग के सुन्दर साधन अवश्य हैं। फिर भी इतना स्वीकार करना होगा कि उनके काव्य उपवन में अस्पष्टता की काँटीली झाडियों के बीच बीच में कुछ ऐसी पंक्तियों रूपी लताऐ भी विद्यमान है जिनके पुष्प–रस से पाठक का हृदय कुछ क्षणों के लिए भाव विभोर हो जाता है उनके काव्य में थोड़ी मात्रा में भाव या अनुभूति उससे अधिक मात्रा में विचार और सबसे अधिक मात्रा में कल्पना है। अतः उनके काव्य में कविता दर्शन और चित्रकला तीनों का स्वाद एक ही साथ उपलब्ध हो जाते हैं यह दूसरी बात है कि कभी कभी एक का स्वाद दूसरे के रस में बाधक सिद्ध होता है इस प्रकार महादेवी वेदना भाव हम देख सकते है।

सहायक ग्रंथ सूची

साहित्यक निबंध - लेखक डॉ गणपित चन्द्र गुप्त
आधुनिक हिन्दी कविता की स्वच्छंद धारा - लेखक डॉ त्रिभूवन सिंह
हिन्दी साहित्य युग और प्रवृत्तियाँ - लेखक शिवकुमार शर्मा